Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

हरियाणवी सांग के संवर्धन में पंडित मानसिंह एवं उनकी गेय प्रणाली का परिचयात्मक विवरण

SHYAM LAL[1] & PROF. SHUCHISMITA SHARMA[2]

1 Research Scholar, Department of Music & Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra

2 Professor, Dean Faculty of Indological Studies, Kurukshetra University, Kurukshetra

सारांश

सांगीत, सांग या स्वांग को हरियाणा का लघु नाट्य भी कहा जा सकता है। स्वांग का अर्थ है- भेष भरना, रूप भरना या नकल करना। सांग सम्राट पंडित लख्मीचन्द हरियाणा के सर्वाधिक लोकप्रिय एवम् बहुचर्चित साँगी है। पं0 जयलाल ने पं0 लख्मीचंद के साथ उनके बेड़े में रहकर महत्वपूर्ण पात्रों की भूमिका अदा की तथा सांग कला को प्रसिद्धि दिलाई। पण्डित दयाचंद 'गोपाल' ने हरियाणा सांगीत को श्रृंगारिक एवं काल्पनिक घटाटोप से निकालकर व्यवहारिकता की ज्योति प्रदान की। पं0 मांगेराम बहुमुखी प्रतिभा संपन्न थे। पं0 चंदनलाल इतने सुंदर व सीधे-साधे थे कि जब वे जनाना कपड़े डालकर सांग करते थे तो आशिक लड़के उनके नाचने के दौरान उनका मुंह देखने के लिए दंगल के चारों और घूमते रहते थे। पंडित सुल्तान का सादा जीवन व रहन-सहन ही बेशकीमती आभूषण था। पंडित रामस्वरूप जी अपने समय के बेजोड़ सांगी रहे, उनकी हर अदा पर लोग झूम उठते थे। संगीत नाटक अकादमी द्वारा हरियाणा के सांगीतकार पंडित तुलेराम को श्रेष्ठ कलाकारों के रूप में सम्मानित किया गया। स्त्री पात्रों के अभिनय में पंडित माईचन्द का कोई प्रतिद्वन्द्वी न था। पंडित लख्मीचन्द ने मरने से पूर्व जहूर मीर से धार्मिक भजन सुने और शिष्य को सम्मति दी कि वह उपदेशक के रूप में उनकी कविता को जन मानस तक पहुंचाए।

बीज शब्द- सांगीत, लोकनाट्य, लोककला, संवर्धन, गेय प्रणाली, बेड़ा।

भूमिका

हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य-परम्परा के सूत्र सुदूर अतीत से जुड़े हुए हैं। सांग, नौटंकी, रामलीला, रासलीला, गनगौर, घोड़ी-बाजा, भांड, कठपुतली, खोड़िया, लूर, खेड्डे, बालनाट्य तथा भालू-बन्दर के नाट्य यहाँ की लोकधर्मी नाट्य-परम्परा की प्रमुख कड़ियाँ हैं। वर्तमान के लोकनाट्यों की प्रभावात्मकता को पहचानकर अब सरकार भी इन्हीं के माध्यम से परिवार-कल्याण, सहकारी खेती, शिक्षा-प्रसार, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत अभियान, प्लास्टिक मुक्त भारत, छोटी बचत एवं नवचेतना का संदेश जन-जन तक पहुँचा रही है।

'सांग' हरियाणा की नाट्य-परम्परा का सिरमौर है, जिसे यहाँ का 'कौमी नाटक' भी कहा जा सकता है। हरियाणा की जनरंजनकारी यह विधा वस्तुतः गीत-संगीत एवं नृत्य की एक मनमोहक त्रिवेणी है, जिसमें सर्वाधिक मज़ेदार है-इसके गीतों की गमक। गीत हरियाणवी सांगों के प्राण होते हैं। हरियाणवी सांगों का ताना-बाना सतरंगे गीतों के कला-तन्तुओं से ही बुना जाता है। इनके बिना सांग का ठाठ-बाठ हो ही नहीं सकता। सांग में यह रागिनी का जादू ही है, जो सिर चढ़कर बोलता है। एक हाथ कान पर रखकर और दूसरे को आकाश में उठाकर अभिनेता जब एक विशेष अन्दाज़ में अपनी रागिनी गाता है, तो समां बँध जाता है। इन सांगों में, लोकप्रिय कथानकों के आधार पर गीतों के माध्यम से अभिनय द्वारा, रस की ऐसी वर्षा की जाती है कि मुक्त-मंच के चारों और बैठे दर्शक रागनियों की स्वर-लहरियों में मंत्र-मुग्ध से हो जाते हैं। सावन की तरह बरसते संगीत की फुहारों में उनका मन-मयूर नृत्य कर उठता है। सांग में किसी प्रसिद्ध रूप का

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

अनुकरण किया जाता है, जिसमें लोक-कथाओं के लोकगीत, संगीत और नृत्य आदि के नाटकीय रूप देकर प्रस्तुत किया जाता है। यह अनुकरण बहुत जीवंत होती है कि इनमें वास्तविक चरित्र होने का भ्रम भी हो जाता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं-

- सांग विधा की ऐतिहासिक जानकारी प्रदान कराना।
- पंडित मानसिंह की सांग परंपरा का अध्ययन करना।
- पंडित मानसिंह की गेय प्रणाली का परिचयात्मक विवरण प्रदान करना।

स्रोत

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रदत एकत्रित करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया। जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है:-

प्राथमिक स्रोत

(क) साँगी चंदनलाल के शिष्य करणसिंह से साक्षात्कार के आधार पर चंदनलाल की शिष्य प्रणाली संबंधी जानकारी प्राप्त की गई।

(ख) तोताराम जी से साक्षात्कार के आधार पर पंडित मानसिंह की सांग परंपरा संबंधी परिचयात्मक तथ्य एकत्रित किए गए।

द्वितीय स्रोत

(क) राममेहर सिंह के 'हरियाणवी साँगीत का उद्भव एवं विकास' के आधार पर हरियाणवी संगीत के उद्भव एवं विकास का अध्ययन किया गया।

(ख) डॉ0 अनिल गोयल 'सवेरा' के 'हरियाणवी लोकनाट्यकार एवं साँगी' में वर्णित प्रमुख साँगियों के जीवन परिचय संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की गई।

(ग) लक्ष्मी नारायण शर्मा 'वत्स' रचित 'रतन कोष' के आधार पर पंडित मानसिंह की गेय प्रणाली के तथ्यात्मक वर्णन की जानकारी प्राप्त की गई।

अनुसंधान प्रविधि

प्रस्तुत शोध-पत्र के विषय संबंधी प्रदत संकलन हेतु ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। ऐतिहासिक शोध प्रविधि की सहायता से पंडित मानसिंह की गेय प्रणाली के साँगीतकारों संबंधी सूचनाएं एकत्रित की गई तथा वर्णनात्मक प्रविधि की सहायता से इन सूचनाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया।

हरियाणवी सांग में पंडित मानसिंह एवं उनकी परम्परा

पंडित मानसिंह का जन्म सन 1885 ई0 में गाँव बासौदी जिला सोनीपत में हुआ था। ये जन्मान्ध तथा अशिक्षित थे। आपके गुरू श्री मुआसी नाथ थे। आप जीवन भर ब्रह्मचारी बने रहे तथा आपको परमज्ञानी माना जाता था। पहले आप

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

एक गाँव से दूसरे गाँव जाकर भजन किया करते थे, बाद में आपने लगभग 10 सांगों की रचना की। जैसे-मदनपाल, प्रभावती, राजा हरीशचन्द्र, सत्यवान-सावित्री तथा नल दमयन्ती आदि। आपने अपने जीवन के अन्तिम समय में भजनोपदेश ही किया।

पंडित मानसिंह की परम्परा के प्रमुख सांगियों का वर्णन

हरियाणा के सूर्यकवि पंडित लख्मीचन्द

हरियाणा के सूर्यकवि एवं हरियाणवी भाषा के शेक्सपीयर के रूप में विख्यात पंडित लख्मीचन्द का जन्म सन 1901 ई0 में तत्कालीन रोहतक जिले के सोनीपत तहसील में जांटी नामक गाँव के साधरण गौड़ ब्रहामण परिवार मे हुआ। पंडित लख्मीचंद के पिता पंडित उदमीराम एक साधारण से किसान थे, जो अपनी थोड़ी सी जमीन पर कृषि करके समस्त परिवार का पालन-पोषण करते थे। जब लख्मीचन्द कुछ बड़े हुए तो उन्हें विद्यालय न भेजकर गोचारण का काम दिया गया। गीत संगीत की लगन आपको बचपन से ही थी, अतः अन्य साथी ग्वालों के साथ घूमतेदृफिरते उनके मुख से सुने हुए टूटेदृफूटे गीतों और रागनियों को गुनगुनाकर समय यापन करते थे। आयु बढने के साथदृसाथ गीत-संगीत के प्रति उनकी आसक्ति इस कदर बढ़ गई की तात्कालीन लोककला सांग देखने के लिए कई-कई दिन बिना बताए घर से गायब रहते थे। एक बार उस समय के प्रसिद्ध सांगी पंडित दीपचन्द का सांग देखने के लिए तथा दूसरी बार श्री निहाल सिंह का सांग देखने के लिए वे कई दिनों के लिए घर से गायब हो गए। तब बड़ी मुश्किल से उनके घरवाले उन्हें ढूंढकर घर लाए।

पंडित लख्मीचन्द हरियाणा के सर्वाधिक लोकप्रिय एवम् बहुचर्चित साँगी है। डॉ. शंकरलाल यादव तो उन्हें मानवीय कवि न कहकर 'दैवी कवि' माना हैं। कोई उन्हें गन्धर्व कहकर पुकाराता है तो कोई आत्म द्रष्टा, कोई ब्रह्मऋषि कहता है तो कोई भविष्य द्रष्टा, तो कोई युग द्रष्टा। खैर; कुछ भी हो, पंडित लख्मीचन्द मानव सुलभ दुर्बलताओं से युक्त होते हुए भी एक महान् एवं अद्भूत व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे हरियाणा के सरल, निश्छल, उन्मुक्त एवं स्वच्छन्द वातावरण में जन्में व पले थे। प्रकृति ने उनके जीवन को ग्रामीण परिवेश के अनेक गुणों व दुर्बलताओं से संजोया था। एक स्थान पर वे स्वयं कहते हैं-

लख्मीचन्द भेद कहै धुर का। मुश्किल पता लगै लय सुर का।।

पंडित लख्मीचंद की विद्वता के कारण उनसे इस कला को सीखने वालों की बड़ी संख्या है। उनके शिष्य पण्डित माँगेराम, माईचन्द, सुल्तान, रतिराम, पण्डित चन्दनलाल, ब्रम्हा-धारे तथा सबसे अन्तिम शिष्य जहूर-मीर आदि प्रमुख हैं। विद्वानों की श्रेणी में रखे जाने वाले पण्डित लख्मीचंद जी का देहावसान 17 अक्तूबर 1945 ई0 को हुआ।

पण्डित जयलाल (जैली)

पण्डित जयलाल का जन्म स्थान गांव बसौदी, जिला सोनीपत में है। इन्हें 'जैली' के नाम से भी जाना जाता है। सांग के क्षेत्र में इनका बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जयलाल वह वयोवृद्ध लोक कलाकार हैं, जिन्होंने सांग के उतार-चढ़ाव के सभी मंजर देखे हैं। न जाने कितनी ही मण्डलियों में इन्होंने योगदान दिया है। कितने ही कलाकारों ने इनसे ज्ञान लिया है। कितने ही लोग इनकी कला के दीवाने हैं। सांग के क्षेत्र में इनका योगदान एवं अनुभव बहुत अधिक है। ये जिला कुरूक्षेत्र के रहने वाले हैं। प्रसार भारती कुरूक्षेत्र से इनके कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं। कुरूक्षेत्र में लगने वाले मेलों में इनकी कला का अनेक बार प्रदर्शन हुआ है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

श्री दयाचन्द गोपाल

सांगीतकार श्री दयाचन्द गोपाल का जन्म 2 जनवरी, 1916 ई0 को ग्राम हरेवली, दिल्ली में हुआ। इनके पिता का नाम श्री शेरसिंह व माता का नाम श्री मती सुधा देवी था। हरियाणवी लोकनाट्य साँग को लोकप्रिय बनाने वाले साँगियों में पण्डित दयाचंद 'गोपाल' का योगदान भी महत्वपूर्ण है। जिन दिनों सांग अपने पूरे यौवन पर था, उन दिनों इनके सांगों की भी तूती बोला करती थी। श्री दयाचन्द गोपाल पंडित जवाहर लाल नेहरू को बहुत मानते थे। महीने में एक बार नेहरू जी से अवश्य मिलते थे। लगभग सन् 1957 ई0 से 1964 ई0 के बीच आकाशवाणी दिल्ली के देहाती कार्यक्रम में गोपाल जी की रागनियाँ प्रसारित हुई। 18 मार्च 1988 ई0 को आकाशवाणी रोहतक में हरियाणा के कवियों के बारे में एक परिचर्चा प्रसारित की थी। गोपाल जी ने इस वार्ता में भाग लेकर एक बार फिर अपने श्रोताओं तक अपने विचारों को पहुँचाया।

पंडित मांगेराम

पंडित लख्मीचन्द के शिष्य पंडित मांगेराम का जन्म सन् 1905 ई0 में श्री अमरसिंह के यहाँ गाँव सिसाणा जिला सोनीपत में हुआ। ये अच्छे खाते-पीते परिवार से थे। पंडित मांगेराम सरल, शान्त, स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने कथनी और करनी में सामंजस्य स्थापित किया। वे एक सजग कलाकार थे। उन्होंने अपने युग को खुली आँखों से देखा और व्यक्त किया। उन्होंने राष्ट्रकवि दिनकर की तरह भारत के अतीत गौरव का गुणगान तो किया ही, साथ ही वर्तमान सामाजिक दशा का वर्णन करते हुए जनसाधारण को जागृत करने का प्रयास भी किया। सामाजिक चित्रण करके भावी भारत के लिए श्रेष्ठ मार्ग चुनने की प्रेरणा दी। पंडित मांगेराम द्वारा रचित रचनाओं में से एक रचना निम्न है-

''पकड़ कालजा रोवण लागी, बेटे की कौली भर कै,

आज कंवर तन्नै जाणा होगा, धरमराज परमेश्वर कै।'' (टेक)

पण्डित चन्दनलाल

पंडित चंदनलाल जिला सोनीपत के बजाणा खुर्द गाँव के थे। ये पण्डित लख्मीचंद के शिष्य थे तथा उनकी मण्डली के प्रमुख कलाकार थे। चंदनलाल जी के पिता का नाम पंडित बालीराम था। पंडित चंदनलाल बहुत सुंदर व सीधे-साधे थे। चंदनलाल इतने सुंदर थे कि जब वे जनाना कपड़े डालकर सांग करते थे तो आशिक लड़के उनके नाचने के दौरान उनका मुंह देखने के लिए दंगल के चारों और घूमते रहते थे। चंदनलाल जी का जन्म 1921 ई0 के करीब हुआ था और उनकी मृत्यु लगभग 1996 ई0 में हुई थी। इसकी मृत्यु के पश्चात इनके शिष्यों के तीन बेड़े बंधे और ये तीनों बेड़े दो-दो भाइयों के थे। एक बेड़ा करणा-लछमण का, दूसरा बेड़ा ईश्वर-राजू का और तीसरा बेड़ा हवासिंह-मानसिंह का बंदा था। इनमें से दो तो सट्टेबाज व शराबी थे और चंदनलाल जी के मरने के बाद ये दोनों बेड़े समाप्त हो गए। परंतु करणा-लछमण का बेड़ा अभी भी चल रहा है।

पंडित रतिराम (सिंधु बॉर्डर/लख्मी प्याऊ)

ये पंडित लख्मीचन्द के ममेरे भाई हैं। इनका गाँव हीरापुर, तहसील बल्लभगढ़, जिला गुड़गांव में स्थित है। ये पुरुष पात्रों का अभिनय बड़ी सफलता से करते रहे हैं। पंडित रतिराम पंडित लख्मीचंद के बेड़ा बांधने के 5 साल बाद बेड़े में शामिल हुए तथा पंडित जी की मृत्यु तक उनके साथ रहे। तत्पश्चात् पंडित रामचंद्र के साथ मिलकर अपना स्वयं का बेड़ा बाँधकर वही सांग व भजन करते रहे। पंडित लख्मीचन्द के पुत्र श्री तुलेराम को अभिनय, संगीत एवं कवित्व की शिक्षा देने का

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

श्रेय पंडित रत्तिराम को ही है। अपने पिता की मृत्यु के समय तुलेराम की आयु केवल पाँच वर्ष की ही थी। अंत में रतिराम हरियाणा-दिल्ली सीमा पर स्थित सिंधू नामक स्थान पर चाय की दुकान करते हैं और साथ ही संगीत प्रेमी श्रोताओं के साथ कला का आनन्द लेते हैं।

पंडित सुल्तान रोहद

गंधर्व कवि पंडित लख्मीचंद की आँखों का तारा व उनके सांगीत बेड़े में उम्रभर आहुति देने वाले सांग-सम्राट पंडित सुल्तान का जन्म 1918 ई0 को गाँव-रोहद, जिला-झज्जर (हरियाणा) के एक मध्यम वर्गीय 'चैरासिया ब्राह्मण' परिवार मे हुआ। इनके पिता का नाम पंडित जोखिराम शर्मा व माता का नाम हंसकौर था। पंडित सुल्तान गोरे रंग के साथ-साथ एक मध्यम कद-काठी के धनी थे और दूसरी तरफ इनकी वेशभूषा धोती-कुर्ता व साफा सुहावनी होने के साथ इनकी प्रतिभा को और भी प्रभावशाली बनाती थी। इनका सादा जीवन व रहन-सहन ही बेशकीमती आभूषण था, जो इतने प्रतिभावान होते हुए भी साधुवाद की तरह जरा-सा भी अहम भाव नहीं था। उनका यह साधुवाद चरित्र उनके सांग मंचन में हमेशा ही झलकता था। उन्होंने कभी सांगों का लेखन तो नहीं किया परन्तु गुरु प्रभाव के कारण बहुत सी फुटकड़ रचनाएँ जरुर की, जिनकी संख्या 50 से 100 के आसपास है। पंडित सुल्तान बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे केवल एक सशक्त सांगी ही नहीं, अपितु एक सर्वश्रेष्ठ गुरुभक्त के साथ-साथ प्रभावी कवि भी थे। वे एक बहुत ही साधारण व्यक्तित्व के साथ-साथ एक अद्भूत साहित्यकार एवं हरियाणवी लोक-संगीत कला के बहुत बड़े सहयोगी भी हैं, जो इस आधुनिक युग के सांगियों व कवियों के लिए एक बहुत बड़ी मिशाल है।

कविराज पंडित रामस्वरूप

प्रमुख कविराज पंडित रामस्वरूप जी का जन्म 16 मार्च 1916 ई0 को पश्चिमी यमुना नहर के ऊपर बसे गाँव सिटावली में साधारण से परिवार पंडित बदलूराम जी के पर हुआ। इनकी माता का नाम भागोदेवी व इनके पिता का नाम पंडित जोधाराम था। पंडित मांगेराम व चंदन लाल भी उनकी रचनाओं को सरहाया करते तथा उनकी रामू व जहूर मीर ने भी बहुत प्रशंसा की है। सन 1945 ई0 में पंडित लख्मीचंद की मृत्यु का सभी शिष्यों को आघात हुआ। पंडित मांगेराम, पंडित सुल्तान सिंह, पंडित चंदन लाल बजाना व पंडित माई राम को साथ लेकर पंडित रामस्वरूप ने सांगों को आगे सुचारू रूप से चलाया तथा सभी ने एक साथ एकजुट होकर चारों दिशाओं में सांग किए। पंडित रामस्वरूप जी ने अनेक सांगों का मंचन किया, वे अपने सांगों में नई-नई बात सुनाया करते, उनकी इस कला से प्रभावित होकर लोगों ने उनका नाम ''बिघ्नी'' रख दिया था।

पंडित तुलेराम

सांगीतकार पंडित तुलेराम का जन्म 18 अक्टूबर सन् 1939 ई0 को गाँव जांटी कलां जिला सोनीपत में सांगीतकार पंडित लख्मीचंद के घर हुआ। पंडित रतिराम इनके गुरु थे। हरियाणा सरकार की ओर से सन् 1982 ई0 में हरियाणा लोक संपर्क विभाग में सांगीत करने के लिए पंडित तुलेराम को आमंत्रित किया गया। जिसमें अन्य सांगीतकार भी आए हुए थे। सभी सांगीतकारों के एक घंटा 45 मिनट के दो-दो कार्यक्रम हुए। उनमें पंडित तुलेराम को प्रशस्ति पत्र मिला। हरियाणा लोक संपर्क विभाग द्वारा भी पंडित तुलेराम को दूसरे राज्यों में सांगीत के कार्यक्रम करवाने के लिए बुलाया गया।

सन् 1985-1986 ई0 में स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी के कार्यकाल में एक दूसरे राज्यों की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम हुए जिनमें पंडित तुलेराम की सांगीत मंडली ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इन्होंने वहाँ

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

लगभग आधा घंटा अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उस कार्यक्रम को अध्यक्ष श्री गिरीश कर्नाड ने काफी सराहा। पंडित तुलेराम को संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष श्री गिरीश कर्नाड ने 14 नवंबर सन् 1989 को पत्र भेजकर बैंगलोर बुलाया। वहाँ पर इन्होंने सांगीत के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। 15 नवंबर सन् 1989 को राष्ट्रपति ने इनको ताम्रपत्र, अंगवस्त्र (शॉल) तथा ₹ 25000 इनाम में दिए। 15 अगस्त सन् 1993 ई0 में हरियाणा सरकार ने पंडित तुलेराम को स्टेट अवार्ड दिया।

झम्मनलाल

सांगीतकार श्री झम्मनलाल का जन्म सन् 1935 ई0 में गाँव सरूरपुर तहसील बागपत, जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश में हुआ। ये आजकल भी हरियाणा और उत्तर प्रदेश में सांगीत कर रहे हैं। इनके गुरु सांगीतकार श्री सुल्तान थे। ये गाँव रोहद के रहने वाले थे। इनके पास रहकर ही उन्होंने सांग सीखा और उनके साथ ही सांगीत में अभिनय करते एवं गाते-बजाते थे। इन्होंने कुछ वर्षों के उपरांत अपने गुरु से आज्ञा लेकर अलग सांग मंडली बनाकर सांगीत करना प्रारंभ कर दिया। श्री झम्मन लाल अशिक्षित हैं। यद्यपि ये उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं। फिर भी इनका सांगीत से इतना लगाव था कि इन्होंने हरियाणा में आकर सांग सीखे। इनके प्रमुख सांग हैं-पिंगला भरतरी, राजा भोज, सरवर-नीर, गोपीचंद, शीरी-फरहाद, राजा हरिश्चंद्र, मदनावत, मीराबाई आदि।

रामू भाई (निवाड़ा वाले)

रामू भाई पंडित रतीराम के सांग में 7 वर्ष तक रहे तथा इन्होंने सांगों में हीरोइन की भूमिका निभाई। इसके बाद पंडित लख्मीचंद के दूसरे शिष्य चंदनलाल सांगी के साथ 16 साल तक रहे। इन्होंने केवल उर्दू की 4 कक्षाएँ पड़ी हुई थी। इसलिए इन्होंने पंडित जी की सारी रागनियाँ व भजन उसी समय उर्दू भाषा में अपने रजिस्टरों में लिख लिए। इनकी पंडित लख्मीचंद की रागनियों व भजनों की 500 पृष्ठों की फोटो कॉपी उपलब्ध है।

पंडित रामचंद्र (खटकड़ वाले)

पंडित रामचंद्र ने पंडित लख्मीचंद के बेड़ा बाँधने के 3 महीने बाद बेड़े में प्रवेश किया तथा पंडित लख्मीचंद जी की मृत्यु तक उनके साथ रहे। पंडित लख्मीचंद की मृत्यु के बाद पंडित रामचंद्र ने लख्मीचंद जी के दूसरे शिष्य पंडित रतिराम (जो लख्मीचंद के सगे मामा का लड़का भी है) के साथ मिलकर 15-16 साल तक पंडित लख्मीचंद जी के बनाए हुए सांग ही किए।

माईचन्द

पंडित माईचन्द गाँव बबैल तहसील पानीपत, जिला करनाल के निवासी हैं। ये अपने अभिनय रूप एवं गायन के लिये हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गाँव-गाँव में प्रसिद्ध थे, विशेष कर स्त्री पात्रों के अभिनय में इनका कोई प्रतिद्वन्द्वी न था। ये बीना, सोमवती, पद्मावत, मदनावत, दमयन्ती, द्रोपदी, नोटंकी और जमाल के अभिनय के लिये प्रसिद्ध थे। पंडित लख्मीचन्द के जीवन काल में ही इन्होंने स्वतन्त्र रूप से अपनी सांग मण्डली स्थापित कर ली थी और इसके माध्यम से उन्होंने अपने गुरु की परम्परा को जन-साधारण तक पंहुचाया। ये सन् 1926 ई0 के लगभग पंडित जी के बेड़े में सम्मिलित हुए थे। इनकी आयु लगभग 65 वर्ष की है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

जहूर मीर

ये लख्मीचन्द के सांगी बेड़े में प्रवेश करने वाले सबसे अन्तिम कलाकार हैं। इनके पिता भिक्खन ने इन्हें आठ वर्ष की आयु में ही लख्मीचन्द के पास छोड़ दिया था। लगभग 16 वर्ष तक ये बाल अभिनेता के रूप में काम करते रहे। पंडित लख्मीचन्द ने मरने से पूर्व जहूर मीर से धार्मिक भजन सुने और शिष्य को सम्मति दी कि वह उपदेशक के रूप में उनकी कविता को जन मानस तक पहुंचाए। जहूर ने अपने गुरु की आज्ञानुसार 1945 ई0 से 1970 ई0 तक भजनीक के रूप में गुरु की रागनियों का गायन जन साधारण के मनोरंजन के लिए किया। आजकल सांगों के प्रति लोगों की संकीर्णता धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। इसलिए 1970 ई0 से ये निपुण कलाकार के रूप में पंडित लख्मीचन्द के सांगों का अभिनय गाँव-गाँव में जाकर करने लगे।

शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध-पत्र में पंडित मानसिंह एवं उनकी गेय प्रणाली के साँगीतकारों का परिचयात्मक वर्णन किया गया है। इनके विवरण की सहायता से हमें हमारी सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी प्राप्त होती है। जिसकी सहायता से हम अपने पूर्वजों की विरासत से रूबरू होते हैं तथा इस प्रकार के शोध अध्ययनों से हम अपने आने वाली पीढ़ियों तक इस ज्ञान को संजोकर रख सकते हैं तथा उसका संरक्षण एवं संवर्धन कर सकते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि हरियाणवी लोकसंगीत में सांग विधा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। पंडित मानसिंह एवं उनकी परंपरा के शिष्यों ने एक लम्बे समय तक इस विधा को जीवंत रखा तथा इसके माध्यम से लोगों का भरपूर मनोरंजन किया। परन्तु मनोरंजन के अत्याधुनिक साधनों के चलते अब सांग प्रायः लुप्तप्राय होते जा रहे हैं। अतः हरियाणवी संस्कृति एवं सभ्यता के संरक्षण हेतु सांग विधा को पुनः जीवित करने की अत्यन्त आवश्यकता है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इसके महत्व को जानकर इसके संवर्धन में अपना योगदान दे सकें।

संदर्भ-ग्रंथ

भीम सिंह मलिक (1981). हरियाणा का लोक साहित्य एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ. पिलानीः चिंता प्रकाशन।

डॉ. अनिल गोयल 'सवेरा' (2006). हरियाणवी लोकनाट्यकार एवं साँगी (जीवन परिचय). जगाधरी (हरियाणा)- अर्चना प्रकाशन।

डॉ. पूर्णचन्द शर्मा (1983). हरियाणा की लोकधर्मी नाट्यपरम्परा का आलोचनात्मक अध्ययन. चण्डीगढ़ः हरियाणा साहित्य अकादमी।

डॉ. राममेहर सिंह (2012). हरियाणवी सांगीत का उद्भव एवं विकास, पंचकूलाः हरियाणा ग्रंथ अकादमी।

श्री रामनारायण अग्रवाल (1976). संगीत: एक लोकनाट्य परम्परा. चण्डीगढ़ः हरियाणा साहित्य अकादमी।

डॉ. शंकरलाल यादव (2000). हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य. इलाहाबादः हिन्दुस्तान अकादमी।

रधुवीर सिंह मथाना (1993). हरियाणा लोकनाट्य-परम्परा एवं कवि शिरोमणि पंडित मांगेराम. रोहतकः लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन।